शीत और उष्ण को सहन करने वाला निर्ग्रन्थ है

- युवाचार्य महाश्रमण

बीदासर 23 फरवरी।

''शीत और ऊष्ण को सहन करने वाला निर्ग्रंथ होता है। शीत और ऊष्ण के दो अर्थ हैं - शीत का सीधा सा एक अर्थ है ठण्डा। उष्ण का अर्थ है गर्म। साधु सर्दी को भी सहन करे गर्मी को भी सहन करे। शीत अनुकूलता का प्रतिक और उष्ण प्रतिकूलता का प्रतीक है। साधु या निर्ग्रंथ वह होता है जो अनुकूलता को भी सहन कर लेता है और प्रतिकूलता को भी सहन कर लेता है। साधु हो या गृहस्थ अनेक परिस्थितियां उनके सामने आ जाती है। एक आदमी परिस्थितियों के सामने झुक जाता है और दूसरे प्रकार का आदमी हर परिस्थिति में स्थितप्रज्ञ की तरह रहता है। अनुकूलता आ गई वह सहज भाव से स्वीकार है और प्रतिकूलता आ गई वह भी सहन भाव से स्वीकार है। अनुकूलता में ज्यादा खुशी नहीं प्रतिकूलता में मानसित दुःख नहीं।'' उक्त विचार युवाचार्य श्री महाश्रमणजी ने तेरापंथ भवन के श्रीमद मघवासमवरण में उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

युवाचार्यवर ने फरमाया कि जैन वांग्मय में वीतराग का शब्द आगम वांग्मय में मिलता है। दसवें आलियम, गीता में स्थितप्रज्ञ का वर्णन किया गया है। स्थितप्रज्ञ मुनि बड़ा अच्छा शब्द है जैन वांग्मय का स्थात्मा, कुशल, वीतराग ये मुझे एक भूमिका पर विराजमान शब्द लगते हैं।

युवाचार्यश्री ने कहा कि शीत और ऊष्ण को सहन करना साधु का तो धर्म है। कभी शारीरिक प्रतिकूलता हो जाती है, बीमारी हो जाती है शरीर में वेदना हो जाती है। साधु के सताईस गुणों में कहा गया वेदना और मृत्यु के प्रति सहिष्णुता वेदना को भी सम भाव से झेलना और मृत्यु का प्रसंग आ जाए तो भी सम रहना, डरना नहीं। ये गुण लक्ष्य आदमी के सामने रहते हैं तो उस दिशा में विकास भी हो सकता है यदि लक्ष्य सामने न रहे तो लक्ष्य विहिन दौड़ पता नहीं आदमी को कहां ले जा सकती है इसलिए जीवन में कोई लक्ष्य बनना चाहिए।

युवाचार्यश्री ने कहा कि मैं कभी-कभी साधु-साध्वियों को संदेश में लिखा करता हूं कि कोई एक विशय को निर्धारित करो अध्ययन के लिए और उस विषय में फिर पारंगतता या विशिष्टता हासिल करने का प्रयास करो। सारे विषयों में पारंगत होना तो कठिन है आदमी एक दो विषय में भी पारंगत या विशिष्ट बन जाए तो उसका भी अपना विशेष मूल्य होता है। अमूक बात पूछना हो तो अमूक को जानकारी है उनसे पता चलेगा ऐसे अधिकार किसी विशय पर हो जाए तो आदमी की उपयोगिता भी सिद्ध होती है और आदमी के द्वारा फिर उस विषय में सेवा भी दी जा सकती है।

युवाचार्यवर ने कहा कि आज फाल्गुन औष्णा चतुदर्शी का दिन है। हमारी सामान्य विधि है चतुदर्शी के दिन परिषद में और साधु-साध्वियों की उपस्थिति में मर्यादा पत्र का वाचन किया जाता है। हाजरी का उद्देश्य मुझे इतना लगा कि आदमी भूलक्कड़ स्वभाव का है वह भूल भी कर सकता है तो स्मृति होती रहे तो भूल में कमी आ सकती है। गलती का एक कारण है अज्ञानता, जानकारी का अभाव। आदमी का स्वभाव खराब नहीं है पर जानकारी नहीं है उस कारण से चाहे अनचाहे प्रमाद हो जाता है। अजान के कारण जो गलतियां होती है उनका समाधान है कि बार-बार जानकारी देते रहो। जानकारी कराते रहो तो उन गलतियों को होने का मौका नहीं मिलेगा।

मुमुक्षु सुमित कुमार की दीक्षा बीदासर में

बीदासर 23 फरवरी।

स्थानीय तेरापंथ भवन स्थित श्रीमद् मघवा समवसरण में युवाचार्य महाश्रमण ने अपने प्रवन के दौरान धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि लाडनूं के खटेड़ परिवार से मुमुक्षु सुमति कुमार की दीक्षा आगामी 1 मार्च, 2009 को देने की घोषणा की। एक मार्च को आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में युवाचार्य महाश्रमण मुमुक्षु सुमित कुमार को दीक्षा प्रदान करेंगे।

दीक्षा समारोह बीदासर के तेरापंथ भवन स्थित मघवा समवसरण में होगा।

<u>युवाचार्य महाश्रमण श्रीमती परमेश्वरीदेवी महिला महाविद्यालय में</u>
कन्या को संस्कारी बनाना अधिक महत्त्वपूर्ण : युवाचार्य श्री महाश्रमण

बीदासर 23 फरवरी।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ के उत्तराधिकारी युवाचार्य श्री महाश्रमणजी आज मध्याह्न में लगभग 2.30 बजे बीदासर के श्रीमती परमेश्वरीदेवी महिला महाविद्यालय में पधारे जहां तेरापंथ कन्या मण्डल के गीत के द्वारा स्वागत किया गया। युवाचार्य महाश्रमण ने उपस्थित महाविद्यालय की छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि यहां आने पर ऐसा लग रहा है कि महिला शसक्तिकरण का प्रयोग किया जा रहा है। महिला सबलत्व की ओर अग्रसर हो रही है। उन्होंने कहा कि एक कन्या संस्कारी होती है तो दो घरों पर प्रभाव पड़ता है पहले वह अपने पिता के घर को संस्कारी बनाती है और बाद में जब वह ससुराल में जाती है तो वहां भी संस्कार का प्रभाव डालती है। इसलिए कन्या को संस्कारी बनाना अधिक महत्त्वपूर्ण है।

युवाचार्य प्रवर ने कहा कि अभिभावक अपने बच्चों को तीन अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए उन्हें विद्या संस्थानों में भेजते हैं उनका पहला उद्देश्य यह रहता है कि उनकी संतान विद्या संस्थान में जाकर ज्ञानवान बने, दूसरा उद्देश्य आत्मनिर्भरता और तीसरा उद्देश्य सुसंस्कारी बने। ये उद्देश्य महत्त्वपूर्ण है, जिसके द्वारा जीवन में सदाचार का विकास हो सके।

युवाचार्य श्री महाश्रमणजी ने विद्या अर्जन के साथ नैतिक मूल्यों को आवश्यक बताते हुए कहा कि विद्या अर्जन के साथ नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा बढनी चाहिए, संयम की चेतना का विकास हो सके तो स्वस्थ समाज का निर्माण में विद्या संस्थान का योगदान बहुत सार्थक सिद्ध हो सकती है। एक महिला में नम्रता आवश्यक है तो साथ में कड़ाई भी आवश्यक है। कड़ाई के द्वारा भी महिलाएं अपनी संतान को गलत रास्ते पर जाने से बचा सकती है।

कार्यक्रम के पश्चात स्थानीय विद्यालयों एवं घरों में पगल्या कराते हुए 3.30 बजे पुनः तेरापंथ भवन पधारे।

इससे पूर्व मुनि पीयुश कुमार ने अपने विचार व्यक्त किये।

इस अवसर पर महाविद्यालय की अध्यक्ष उर्मिला गौड़ ने आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन सुश्री भावना सेखानी ने किया।

– अशोक सियोल

9982903770